# धर्म जीवन

अक्तूबर 2004


✡ अमरीका में शुभ संग्राम

✡ तुम्हारे बिन नहीं कोई ठिकाना है।

✡ देव समाज से लोग किस तरह हानि उठा लेते हैं।

✡ कामयाब होने के मूलमंत्र

✡ ग्रैण्ड पेरंटस डे

✡ सत्य धर्म बोध उत्सव

# अमरीका में शुभ संग्राम

## (पिछले अंक से आगे)

जारजिआ (Georgia) अमरीका के जारजीया प्रान्त में श्रीमान बलदेव सिंह जी 6 अगस्त को अटलांटा गए। वहां श्रीमान शादीलाल जी की दो सुपुत्रीयों, बीबी प्रभा जी और शशी जी गोयल रहती हैं। बीबी प्रभा जी ने श्रीमान जी के पहुंचने की बहुत खुशी मनाई। दोनों बहनों के साथ हितकर बताचीत की गई। 8 अगस्त को उनको और उनके कुछ सम्बन्धीयों को खाने पर आमन्त्रित किया और बाद में वहां एक सभा रखी गई। उनके बेटे भी दूर से आकर उसमें शामिल हुए। 22-25 की हाजरी थी। अपने आपको जानने और सम्बंधों के विषय में श्रीमान जी ने ब्यान किया। बहुत पढ़े लिखे जन थे। उन्होंने काफी प्रश्न किए, जिनके उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट किया गया।

बीबी प्रभा जी को प्रेरणा दी गई कि इस विरोधी हालात में वह अपनी सेवकी की प्रतिज्ञाएं बारीकी से पूरी करने का यत्न करें।

उसी शाम श्रीमान जी ऐथनज में श्रीमती शशी बाला जी खेड़ा और उनके सुपुत्र आशीश जी श्रीमान जी को लेने पहुंच गए। सब एक दूसरे को मिलकर बहुत खुश हुए। श्रीमान जी वहां पर दो दिन रहे। हितकर बातचीत होती रही।

10 तारीख की शाम प्रभा जी फिर श्रीमान जी को ले गई। अगली सुबह उन्हें Indianapalis के लिए वह हवाई अड़डे पर छोड़ गए। दोनों स्थानों पर सब ने श्रीमान जी का बहुत ख्याल रखा।

**सैंडीगो (कैलीफोरनिया)** 18 अगस्त को श्रीमान जी यहां पहुंचे और 20 तारीख तक वहां रहे। वहां एक अमेरिकन लेडी के लिए काफी पुस्तकें ले गए थे। उन्हें दी और उनके बहुत से प्रश्नों का उत्तर दिया। उन्होंने धर्म के विषय में बहुत दिलचस्पी ली। उसी रात श्रीमान जी परायणा जी की छोटी पुत्री बीबी रूपिन्द्र जो 80 मील की दूरी पर रहती थी, मिलने गए। उनको समाज की पुस्तकें दी। उनके साथ उस रात और अगले दिन सुबह हितकर बातचीत की। साहित्य पढ़ने का उन्होंने खुशी खुशी वायदा किया। अगली सुबह श्रीमान जी के सुपुत्र उन्हें वहां से वापिस ले गए।

वहां पर एक लेडी Kay जो पहले भी मिली थी, उन्हें भी पुस्तकें दी।

Indianapalis पहुंचकर भी श्रीमान जी ने उस Lady को और रुपिन्द्र जी को साहित्य post किया। चण्डीगढ़ से भी श्रीमान जी ने रुपिन्द्र जी को उनके पड़नाना सरदार जमीयत सिंह जी का जीवन चरित्र post किया।

जैसे पहले बताया जा चुका है कि अमरीका में देव समाज को Register करने के प्रान्ति और सैंटरल अमरीकी सरकार को निवेदन पत्र फारम हज़ारों डालर खर्च करके summit ही किया, जिसको अमरीका की Central Govt. ने भी मंजूरी दे दी। जिसकी लिखित स्वीकृति मिल गई है। अमरीका में इस समाज को दान देने वालों के पैसे पर कोई Tax नहीं लगेगा। यह हम सब के लिए बहुत गौरव की बात है।

इस सारे काम में डा० देव अनुरूप बराड़, श्रीमान जी के सुपुत्र ने समाज को Register कराने में और सब जगह जाने में हजारों डालर खर्च करके बहुत खुशी प्राप्त की।

# धर्म जीवन

खण्ड 16 अंक 10
अक्तूबर 2004
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़


# तुम्हारे बिन नहीं कोई ठिकाना है।

हमारा यह विश्वास है, और यह विश्वास नेचर की सत्य घटनाओं और नियमों पर स्थापित है कि प्रत्येक अधिकारी मनुष्यात्मा के लिए नेचर का यह फतवा है कि वह देवात्मा के देव प्रभावों का सदा मोहताज रहे अर्थात जो अधिकारी मनुष्यात्मा अपना आत्मिक कल्याण चाहते हैं, उनके लिए यह बात लाज़मी और ज़रूरी है कि वह देवात्मा के चरणों के साथ जुड़कर उनके देव प्रभावों को प्राप्त करें। नेचर ने देवात्मा को पैदा इसलिए किया है कि मनुष्यात्मा के विकास का सिलसिला जो बंद हो चुका है, उसको खोला जाए और मनुष्य का आगे विकास का क्रम चले। यह विश्वास जैसे ऊपर लिखा है नेचर की सत्य घटनाओं और नियमों पर आधारित है। यह कैसे? वह इसलिए कि प्रत्येक मनुष्यात्मा सुखार्थी रहने के लिए बाध्य है। सुखार्थी मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह मिथ्या और अशुभ का मार्ग अपनाए। मिथ्या और अशुभ का मार्ग आत्मा के पतन वा मौत की तरफ है। यह मार्ग न केवल भयानक है, परन्तु वह अपने साथ अनेकों प्रकार के दुख और आज़ाब लाता है। मनुष्य के लिए इससे बढ़कर मंद भाग का क्या विषय हो सकता है कि उसका आत्मा जो मूल वस्तु है दिन पर दिन पतित होता जाता है।

प्रत्येक सुखार्थी मनुष्य भिन्न भिन्न सुख अनुरागों को बढ़ाकर दुर्भाग्य की अवस्था में पहुंच जाता है और वह आत्मा के सम्बंध में अंधा हो जाता है। अपने इस आत्मिक पतन को देखकर यह अनुभव नहीं कर सकता और न ही अपने आत्मिक पतन को देखकर डरता है। इस दुर्भाग्य पूर्ण अवस्था में रहकर वह आत्मिक अंधता और आत्मिक पतन के परिणामों से नहीं बच सकता। आत्मिक पतन के लगातार जारी रहने से जो आत्मा की मौत होती है, उसको देखने के तो बिल्कुल अयोग्य हो जाता है, लेकिन इस आत्मिक पतन से जो दुख, अज़ाब और कष्ट पैदा होता है, वह उसको अनदेखा नहीं कर सकता। दुख को यह अनुभव भी करता है और उससे निकलने की अकांक्षा भी रखता है, लेकिन आत्मिक अंधता के कारण वह यह उपलब्ध नहीं कर सकता कि सैंकड़ों प्रकार के दुखों और कष्टों का कारण मनुष्य की अपनी सुखार्थी प्रकृति में ही

वर्तमान है। दुखों के कारणों से अंधा होकर वह दिनों दिन दुखों को ही बढ़ा लेता है, उन्हें कम नहीं कर सकता। नेचर के नियम के अनुसार जब तक कारणों का पता न लगे, तब तक उन कारणों को दूर करने या मिटाने के नियमों का भी पता नहीं लग सकता।

एक अच्छी सुशिक्षित लड़की, जो एक उच्च पदधारी अफसर की पत्नी थी, को मिलने का अवसर मिला। वह बहुत दुखी थी और उसने कहा कि दुखों से बचने के लिए वह एक धर्म ग्रंथ पढ़ने में व्यस्त रहती है। मैंने पूछा कि कई महीनों से जो वह ग्रंथ पढ़ रही थी क्या उससे उनके दुख दूर हुए। वह कहने लगी कि जितनी देर वह पाठ करती रहती है तो दुख भूले रहते हैं, फिर पारिवारिक कामों में लग जाती है ते दुखों का दौर फिर शुरू हो जाता है।

मैंने कहा कि यह हाल शराबीयों और अफीमीयों का है। कई शराबी और अफीमी यह कहते हैं कि वह शराब इसलिए पीते हैं और अफीम इसलिए खाते हैं कि वह कुछ समय के लिए दुखों को भूल सकें जब तक वह नशे में मस्त होते हैं, तो वह बेहोशी के आलम में वह दुखों को भूल तो अवश्य जाते हैं, परन्तु जब ही नशा उतरता है, वह दुखों के सागर में डूबना शुरू कर देते हैं।

इस पढ़ी लिखी स्त्री को पैसों की कमी नही थी। परन्तु स्वयं भी स्वार्थी और पति भी अपने अहंकार का दास था एक दूसरे के गुणों और उपकारों को भुलाकर अपनी नीचताओं और हीनताओं से अंधा होकर, एक दूसरे के प्रति शिकायतों से भरे रहते थे। स्वार्थ और अहंकार का भूत तो कभी भी तृप्त नहीं हो सकता और नहीं होता। अहंकार का दास तो अपनों को भी नहीं बख़्शता। जब तक मनुष्य स्वार्थ वा अहंकार में फंसा रहेगा, तब तक यह कैसे सम्भव हो सकता है कि वह दूसरों के प्रति ख्याल रख सके।

एक ग्रेजुएट स्त्री कहने लगी कि मैं अपने मायके जाना पसंद नहीं करती, मैंने पूछा कि क्यों? वह कहने लगी कि जब भी मैं अपने माता जी को मिलती हूं, तो वह शिकायतों का दफ्तर खोलकर बैठ जाती हैं। मैं उनकी सहायता भी करती हूं और करना भी चाहती हूं, परन्तु उन्हें मुझसे और औरों से शिकायतें ही रहती हैं। इसी प्रकार एक अच्छे विद्वान आदमी का ब्यान है कि वह चाहते हुए भी अपनी विधवा बहन को अपने पास नहीं रख सकते। वह जितना समय आती है, अपने ससुराल की निंदा में ही गुज़ार देती है। अपने ससुराल वालों से बहुत सारी सेवाएं पाकर भी उनका कोई गुण चिंतन नहीं करती।

इस प्रकार एक और परिवार में मैं गया। उस परिवार की एक बज़ुरग स्त्री ने कहा, कि मैं अपने परिवार की सेवा करना चाहती हूं, परन्तु एक रिश्तेदार की जितनी भी सेवा की जाए वह शिकायतों से ही भरी रहती है। वह यहां तक कहने लगी कि बेशक उस स्त्री को कोई राज भी दे देवे, वह खुश नहीं रह सकती। एक अच्छे पद धारी ने बताया हमारा पति पत्नी का सम्बंध इस अवस्था में पहुंच चुका है कि यदि हम सौ बार इकट्ठे बैठते हैं तो पचास बार तो ज़रूर लड़कर उठते हैं और रोकर ही अलग होते हैं। सारी उम्र का साथ निभाने का वायदा करके भी दो साथियों का ऐसा बर्ताव क्यों होता है। क्यों वह अपने अज़ीज़ों का भी ख्याल नहीं रखते हैं, इस प्रकार की अवस्था लाखों और करोड़ों घरों में

वर्तमान है, और यही कारण है कि तालाक की रस्म जारी है। पश्चिमी देशों में तो उतनी साल भर में शादियां नहीं होती जितने तालाक हो जाते हैं। स्वार्थी मनुष्य अपनत्व का दास हो जाता है और धीरे धीरे अपनत्व का दास होकर वही समस्याएं और सम्बंधों में भी खड़ी हो जाती है। दूसरों की नीचताएं वा हीनताएं नज़र आती रहती हैं और अपनी नीचताओं की ओर ध्यान नहीं जाता, यही दुखों का मूल कारण है।

सुखार्थी मनुष्यात्मा के पतन और दुखों का यह एक नहीं ऐसे सैंकड़े पहलु हैं, जो उनकी बर्बादी का कारण बनते हैं। यदि और पहलुओं को छोड़कर एक पहलु पर ही विचार किया जाए तो पता लगता है कि मनुष्य कितनी कृपा पात्र अवस्था में है। एक डाक्टर साहिब जो बहुत धन और जायदाद रखते थे, वह अपनी व्यथा सुनाने लगे। उनके परिवार में वह और उनकी धर्म पत्नी थी। उनका लड़का बहु और उनके दो बच्चे थे। उनको यही फिकर लगा रहता कि उनके पीछे उनके परिवार का क्या होगा? क्योंकि सब एक दूसरे के प्रति शिकायतों के पुलंदें खोले रखते थे। जब वह बिमार हुए तो उन्होंने अपनी वसीयत अपने बेटे के नाम करनी चाही और उन्होंने ऐसा ही किया। एक दिन जब वह लेटे हुए थे तो उनके कानों में लड़ाई झगड़े की आवाज़ पड़ी। उनका लड़का उनकी माता के साथ लड़ रहा था। मां के प्रति उसने ऐसे अपमान जनक शब्द प्रयोग किए कि पिता का दिल टूट गया। वह बैचेन हो गए। पिता ने अनुभव किया कि यदि वह सारी जायदाद बेटे के नाम छोड़ गए तो उनकी पत्नी बेटे की मोहताज हो जाएगी। उसका तो यह बुरा हाल कर देंगे। उन्होंने 30 रूपये महीना किराए वाला मकान अपनी पत्नी के नाम वसीयत में कर दिया।

जब बेटे को पता लगा, उसको बहुत चोट लगी, वह मां के सम्बंध में अनाप शनाप बोलने लगा। डाक्टर साहिब कहने लगे कि मैं सोचता रहा कि इस नारकीय लीला का कोई ईलाज़ नहीं? वह एक धार्मिक आदमी कहलाते थे। एक प्रसिद्ध धार्मिक सोसाईटी के मैंबर थे, जिस सोसाइटी के गुरु अपने आपको परमात्मा समझते थे। परन्तु इस लाचारी से मनुष्य का कैसे छुटकारा हो? कुंए में गिरा मनुष्य अपनी सहायता आप नहीं कर सकता। यदि ऐसा जन अंधा हो तो उसकी हालत और भी कृपा-पात्र हो जाती है।

इस प्रकार सुखार्थी मनुष्य जो अपनत्व का दास उसकी गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है, बल्कि वह अंधा भी है। इस भयानक अवस्था से निकलने के लिए नेचर ने अपना नियम रखा है, वह नियम यह है कि ऐसे अंधकार ग्रस्त आत्मा को ज्योति प्राप्त हो, जिसके द्वारा उसकी अंधता दूर हो, और ऐसी कृपा पात्र अवस्था के कारणों का पता लगे। इन कारणों के भयानक फलों का पता लगे और इनसे निकलने की उसके भीतर आकांक्षा पैदा हो। इसके भिन्न उसे देव तेज की प्राप्ति हो जो उसकी अपनत्व की गुलामी की जंजीरों को तोड़ दे। उनकी अवस्था में भी यह नियम पूरा हुआ। उनको देव ज्योति मिली और देव तेज भी मिला, उनकी पत्नी और उनके बेटे को भी यह सौभाग्य मिला।

परिणाम क्या हुआ? नेचर में एक आश्चर्य जनक लीला पैदा हुई। सब पारिवारिक जन अपनी अपनी अवस्था को देखने लगे। अपनी गल्तियों और दूसरों के उपकारों और गुणों को देखने लगे, फिर

क्या था फटे हुए दिल एक बार फिर मिल गए। एक दूसरे के प्रति श्रद्धा और प्रेम भावों से भरकर नज़दीक होने लगे और डाक्टर साहिब फरमाने लगे, श्रद्धा और प्रेम के बढ़ने से वह एक दूसरे के प्रति इतने सेवाकारी हो गए कि विशेष परिवार गिना जाने लगा। एक दूसरे के प्रति उनकी शिकायतों का भी अध्याय खत्म हो गया। एक दूसरे के उपकारों गुणों का अध्याय शुरू हो गया। परन्तु यदि देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज जिन आत्माओं को नहीं मिलेगी तो मनुष्य की कृपा पात्र अवस्था ही रहेगी। सुखार्थी मनुष्य जो अशुभ का दास हो चुका है। उसके लिए अवश्यक है कि स्वयं अपनत्व की अंधेर कोठड़ी में रहकर ठोकरें खावे और दूसरों को भी ठोकरें मारे।

अब ऐसे सुखार्थी और अपनत्व के दास मनुष्यों को कौन बचावें? ऐसे सब रोगों और अंधकार ग्रस्त आत्माओं के लिए अवश्यक है कि उस देव ज्योति और देव तेज को प्राप्त करें। अपनी आत्मिक पतन की अवस्था से निकलने के लिए अपनत्व के दास मनुष्याताओं को देवात्मा का मोहताज होना पड़ेगा। इसके बिना कहीं ठिकाना नहीं। देव ज्योति और देव तेज देव शक्तियों से ही प्राप्त होते हैं, इसलिए ऐसे सब कृपा पात्र मनुष्यों के लिए आवश्यक है कि वह श्रद्धा और विश्वास के साथ देवात्मा से जुड़कर देव ज्योति और देव तेज प्राप्त करें।

---

# महोत्सव मुबारक

परम पू० भगवान देवात्मा का 154 वां शुभ जन्म महोत्सव बिल्कुल निकट आ रहा है, वह हर वर्ष की तरह इस वर्ष चण्डीगढ़ सैक्टर 18 डी धर्मशाला में 25 दिसम्बर से 28 दिसम्बर सन् 2004 तक पूर उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। पाठ्कगण और श्रद्धावान जन अभी से उपरोक्त दिनों को ध्यान में रखकर इस शुभ अवसर पर पहुंचने की तैयारी आरम्भ कर दें।

(मंत्री)

# देव समाज से लोग किस तरह हानि उठा लेते हैं।

बेशक यह बात सच है कि समाज के किसी सत्संग के शुभ अवसर पर पहुंचकर आम तौर से एक एक जन विविध पहलूओं में इस कदर लाभ उठाता है कि जिसके लिए वह धन्यवाद देता हुआ तृप्त नहीं होता है। मगर फिर भी कई ऐसे अभागे जन भी होते हैं या हो सकते है कि जो ऐसे अमूल्य लाभ उठाने की बजाए एक या दूसरे पहलू में कोई हानि उठा लेते हैं। अब सवाल यह है कि ऐसे वह कौन से कारण है कि जिनकी वजह से एक एक जन ऐसे किसी हितकर अवसर को अपने लिए हानिकारक बना लेता है या उसे उसको जिस कदर हितकर बनाना चाहिए वह उसे वैसा हितकर नहीं बना सकता। ऐसे कारण मोटे तौर पर इस प्रकार हैं: -

1. जो लोग सिर्फ तमाशबीन की तरह शुभ अवसर पर पहुंचते हैं और सिर्फ यही नहीं कि ऐसे अवसर से लाभ उठाने की अपने भीतर कोई आकांक्षा नहीं रखते बल्कि एक या दूसरे नीच राग वा नीच घृणा शक्ति के इस कदर दास हैं कि वह Passive हालत में रहकर भी सभाओं में योग नहीं दे सकते बल्कि सभा में बैठे बैठे ही ऐसे चक्करें में पड़े रहते हैं जिससे देवात्मा के देवप्रभाव उनके आत्मा में प्रवेश नहीं कर सकते।
2. जो फ़जूल नुक्ताचीन या निंदक होते हैं और इस खौफजनक रोग में ग्रस्त होने के कारण सिर्फ यही नहीं कि आप लाभ नहीं उठा सकते बल्कि अपनी मौजूदगी और अपनी बातचीत से दूसरों के लिए भी हानिकारक बनते रहते हैं।
3. जो सभा में बैठे हुए या वहां से उठकर एक या दूसरे प्रकार की दुष्चिन्ता करते रहते हैं।
4. जो औरों से ही सेवा व सम्मान पाने के आकांक्षी रहते हैं व खुद अपनी तरफ से दूसरों को सच्चा सम्मान देने या औरों की खिदमत करने की कोई जरूरत अनुभव नहीं करते।
5. जो किसी जन की किसी कमी या किसी नीचता को सुनकर या देखकर या किसी की तरफ से अपनी ख्वाहिश के अनुसार कोई और सम्मान या सेवा न पाकर या किसी की तरफ से कोई उचित रोक टोक हासिल करके उसके प्रति नीच घृणा भाव से ऐसे भर जाते हैं कि उसका मुंह तक देखना नहीं चाहते या उसकी हानि करने को तैयार हो जाते हैं।
6. जो किसी सभा में आराम से नहीं बैठ सकते, बल्कि अपने दिल दिमाग के लिहाज से एकाग्र हालत में नहीं रहते।
7. जो अपनी किसी उचित जरूरत या तकलीफ के समय स्वयं उसका प्रबंधकों के पास इज़हार करने और दीनता पूर्वक कोई सहायता चाहने की बजाए इस फिक्र या चक्कर में पड़े रहते हैं कि दूसरे जन अपने आप ही उसके आगे पीछे क्यों नहीं फिरते और उसकी जय या वह जरूरत पूरी क्यों नहीं करते।
8. जो अपनी वर्तमानता से और जनों पर तो

अपनी जिस्मानी सेवा का भार उचित से बहुत ज्यादा डाल देते हैं मगर खुद किसी के कुछ भी काम आना नहीं चाहते।

9. जो सभाओं में शामिल होने के अतिरिक्त अपना बाकी का समय निकम्मे पड़े रहकर गुजार देते हैं।
10. जो सत्संग में पहुंचना अपना धन्य भाग बोध नहीं करते बल्कि दूसरों पर एहसान महसूस करते हैं।
11. जो सभाओं में शामिल होने के बाद बाकी के वक्त में अपने साथियों के साथ सभा के किसी हितकर मजबून पर विचार करने की बजाए अनाप शनाप इधर उधर की फजूल बातों में लगे रहते हैं।
12. जो ऐसे किसी अवसर पर पहुंचकर अपने आप न तो कोई शारीरिक और न मानसिक सेवा करना चाहते हैं व न कोई धन आदि देना चाहते हैं। अगर धन वगैरा की किसी अपील को सुनकर औरों के दबाव से कुछ दान देने के लिए मजबूर हो जाते हैं या किसी के दबाव में आकर कोई शारीरिक सेवा करने के लिए लाचार हो जाते हैं और ऐसे सेवा करके पीछे से अफसोस व तकलीफ महसूस करते रहते हैं आदि आदि। कई सूरतों में एक एक जन सत्संग के शुभ अवसर पर पहुंचकर लाभ उठाने की बजाए कई प्रकार की अपनी हानि करता है और ओरों के लिए हानिकारक प्रमाणित होता है।

इसलिए सख़्त जरूरत है कि जो लोग समाज के किसी शुभ अवसर को अपने लिए हानिकारक नहीं बल्कि कल्याणकारी बनाना चाहें वह उपरोक्त हानिकारक कारणों से बचें और उन हितकर बातों की पैरवी करें कि जिनसे किसी सत्संग के शुभ अवसरों को अपने लिए ज़्यादा से ज़्यादा कल्याणकारी बना सकते हैं।

**(एक पुराना लेख)**

---

# शोक समाचार

गहरे दुःख व शोक की बात है कि बहुत प्यारे छोटू जी गरोवर (डा० मनसा सिंह जी पदमपुर के छोटे सुपुत्र) का 2 सितम्बर दिन के समय, अपने ही खेत में, चुनावड़ में अपने ही ट्रैक्टर द्वारा दुर्घटना होने के कारण भरी जवानी में अचानक ही देहांत हो गया। वह अपने माता पिता व अपनी पत्नी को ऐसे पहाड़ जैसे सदमें द्वारा कभी न भूल सकने वाला घाव दे गए है। इस दुखांत ने सारे इलाके अंदर हैरानी वा शोक की लहर पैदा कर दी है।

छोटू जी केवल 32 - 33 वर्ष के थे उनके पीछे उनके माता पिता, पत्नि वा एक 6 - 7 वर्ष का बेटा है। वह बड़े श्रद्धावान वा सेवाकारी थे।

हम समस्त संगत की ओर से सारे परिवार को इस न भूल सकने वाले दुख में गहरी हमदर्दी का प्रकाश करते हैं और दिली कामना करते हैं कि उनके पारिवारिक जनों को धैर्य वा शान्ति मिले।

परलोक में देह त्यागी आत्मा को भी शान्ति मिले, सहाय मिले और उनकी रक्षाा हो। सबको धैर्य मिले।

**(समस्त धर्म सम्बंधी)**

# कामयाब होने के मूलमंत्र

एक बार राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन के सचिव देर से दफ्तर पहुंचे। जब उन से देरी की वजह पूछी गई तो उन्होंने कहा, "श्रीमान, घड़ी की सुस्त रफ्तार के कारण मुझे देर हो गई।" राष्ट्रपति ने तुरंत कहा, "या तो आप अपनी घड़ी बदल लीजिए या फिर मैं अपना सचिव बदल लूं।"

जीवन का हर पल बहुत ही कीमती होता है। जिस ने भी समय के महत्व को समझा है और खुद को समय के साथ साथ अनुशासित किया है। उस ने अपनी कामयाबी सुनिश्चित कर ली। यदि तुम अपना समय सुनियोजित तरीके से गुजारें और लक्ष्य की ओर लगन से आगे बढ़ते रहें तो वह दिन दूर नहीं होगा जब मंजिल हमारे सामने होगी।

यदि हमें 100 कौड़ियां हासिल करनी है तो हमें एक कौड़ी को कीमती समझना होगा। बहुत से व्यक्ति भूत और भविष्य की चिंता में अपने वर्तमान को ही बरबाद करते रहते हैं। वे कुछ करना तो चाहते हैं परन्तु क्या किया जाए, कैसे किया जाए, कब से किया जाए? आदि ऐसी ही चिंताओं से परेशान होकर अपना ज्यादातर समय गंवा देते हैं। और तब तक बहुत वक्त निकल जाता है।

किसी भी मकसद में कामयाब होने की पहली शर्त है कि आप नियमित दिनचर्या अपनाएं। हर काम समय पर करें बेकार में समय बरबाद न करें। आईनसटाईन ने कहा है, 'समय ही मनुष्य का निर्माता है। सभी कामयाब व्यक्तियों ने समय की महत्तता को समझा है। और यदि आप भी कामयाब व्यक्ति बनना चाहते हैं तो समय के साथ चलें।'

बड़े बड़े आविष्कारक जिन के अविष्कारों को देख कर हम चौंक कर रह जाते हैं ज्यादातर उन्हें कई बार नाकामी का ही सामना करना पड़ा है। परन्तु फिर भी वे निराश नहीं हुए बल्कि अपने काम में लगन से जुट कर प्रयास करते रहे और आखिर में उन्हें कामयाबी मिली।

निराश व्यक्ति जरा सी भी परेशानी आने पर घबरा जाता है और काम छोड़ कर क्या करे, क्या न करे की उधेडबुन मे फंस जाता है। जबकि आशावादी व्यक्ति हमेशा प्रयास करता रहता है। और लक्ष्य पा कर ही दम लेता है। कहा भी है कि जो व्यक्ति अपनी धुन के पक्के होते हैं वे अपनी मंज़िल जरूर पा लेते हैं।

"मन के हारे हार है और मन के जीते जीत" के मुताबिक मन में आशा की ज्योति जला कर रखने से ही काम आसान बनता है। वास्कोडिगामा और कोलबंस का किस्सा तो सभी ने पढ़ा ही होगा। जिन्होंने आशा के बल पर अपना लक्ष्य पूरा किया है और कोलबंस ने 1492 में अमेरिका और वास्कोडिगामा 1498 में भारत के लिए रास्ता खोजा।

बहुत ही कठिन कामों को भी इसी तरह निरंतर जुट कर ही अंजाम दिया गया, चाहे वह एवरेस्ट विजय हो या चंद्रमा पर उतरना। जब तमाम लोगों ने सतत प्रयासों के बल पर अपने लक्ष्य पाए हैं तो आप क्यों नहीं पा सकते? बस, आज से ही और अभी से ही आप को मजबूत संकल्प लेने की

जरूरत है और साथ ही जरूरत है आप की निरंतर साधना की।

व्यक्ति की मेहनत ही कामयाबी हासिल करने का एक मूलमंत्र है। जो जीवन की आधारशिला भी है। हमारे 2 हाथ और 2 पैर मेहनत करने के लिए ही हैं। जो व्यक्ति एक पल भी बेकार जाने देते हैं, वह अपने विवेक और ज्ञान के खजाने का अपमान करते हैं। इस से व्यक्ति का ही नहीं बल्कि राष्ट्र का ही अहित होता है।

देश और खुद की खुशहाली, उन्नति और विकास के लिए मेहनती होना जरूरी है। मेहनत के जरिए ही हम अपनी और समाज की उन्नति और कल्याण कर सकते हैं। चाहे वह दिमागी मेहनत हो या शारीरिक मेहनत, हम मेहनत से ही भावी भारत का निर्माण कर सकते हैं। इतिहास गवाह है कि हम ने मेहनत के बल पर क्या से क्या कर के नहीं दिखाया है। साहसी और मेहनती व्यक्ति हर क्षेत्र में कामयाब होते हैं।

महान आचार्य चाणक्य का मानना था। कि 'कितनी भी कठिन साधना क्यों न हो, मैं साध्य तक पहुंच ही जाऊंगा।' इसी के सहारे उन्होंने ऐतिहासिक कामयाबियां भी हासिल की। असल में मेहनत ही जीवन में कामयाब होने के रहस्य की कुंजी है।

**आत्मनिर्भर व्यक्ति ही कामयाब**

स्वावलंबन यानी खुद पर भरोसा करना भी कामयाबी का मूल आधार है। 'स्व' का अर्थ है अपना खुद का और आवलंबन का अर्थ है सहारा लेना यानी आत्मनिर्भरता। इस का जीवन में अधिक महत्व है। जीवन में केवल वही व्यक्ति कामयाब होते हैं जो स्वावलंबी होते हैं। स्वावलंबी व्यक्ति के सामने संसार की सारी बाधाएं सिर झुकाती है। स्वावलंबन पैदा होता है, जिस से उस के व्यक्तित्व का विकास होता है। और समाज में भी केवल ऐसा ही व्यक्ति आदर पाता है।

इस के विपरीत जो व्यक्ति हर काम के लिए औरों का मुंह ताकता है। जो किसी के सहारे की अपेक्षा में बैठा रहता है वह जीवन में कभी भी कामयाब नहीं हो पाता है। उसे खुद पर भरोसा नहीं होता है और हर काम में उसे रूकावटें ही नज़र आती हैं। मानसिक नजरिए से वह बौना रह जाता है। समाज में उस का आदर तो नहीं हो पाता बल्कि वह खुद पर, समाज और देश पर भी बोझ के समान होता है।

लिहाजा, कामयाब होने के लिए स्वावलंबी बनें और अपनी हर समस्याओं और मुश्किलों से खुद जूझ कर अपनी मंजिलें तय करें, स्वावलंबी बन कर व्यक्ति जीवन मे कामयाब होने का मूलमंत्र और सम्मान से जीने की कुंजी पा सकता है।

अनुशासन, कामयाबी के मार्ग को प्रशस्त करने वाला अनोखा अंग है। मार्ग में आने वाली मुश्किलों पर विजय हासिल करने वाले व्यक्ति ही कामयाब होते हैं और इस में आधार बनती है, अनुशासन की भावना।

प्राचीन काल मे आश्रमों में ऋषिमहर्षि अपने शिष्यों को पढ़ा कर विद्वान बनाने के बाद जीवन में हमेशा अनुशासित रहने पर जोर देते थे। वे जानते थे कि अनुशासित व्यक्ति ही किसी दूसरे के अनुभवों से लाभ उठाता है।

भारतीय मनीषियों ने अनुशासन को अनिवार्य माना है ताकि व्यक्ति का समुचित विकास हो सके। सन 1857 में अंगरेजों के खिलाफ लड़ी गई

आजादी की लड़ाई में नाकामयाब होने की खास वजह अनुशासनहीनता थी। 31 मई को पूरे उत्तर भारत में विद्रोह करना तय हुआ था। परन्तु 10 मई को ही मेरठ की भारतीय सेना ने विद्रोह कर दिया। नतीजतन, अंग्रेज सचेत हो गए। जिस का परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ा। बाद में महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, राणा प्रताप और शिवाजी ने अनुशासन का पालन कर अंगरेजी शासन की नींव हिला दी।

**कामयाबी का आधार है अनुशासन**

सेना की कामयाबी का आधार भी अनुशासन होता है। नेपोलियन, समुद्रगुप्त, सिंकदर आदि महान सेनानायकों की लगातार विजय का रहस्य उन की सेनाओं का अनुशासित होना ही था। नौजवानों के लिए तो अनुशासित होना बहुत जरूरी और अनिवार्य है। क्योंकि वही देश का भविष्य होते हैं। इसलिए जीवन में कामयाबी हासिल करने के प्रमुख सूत्र, अनुशासन, स्वावलंबन और मेहनत तो है ही, साथ ही हमें अपना लक्ष्य तय कर समय के साथ उसे हासिल करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। फिर देखिए, कामयाबी आप के कदमों को चूमेगी।

निष्कर्ष यह कि हम लक्ष्य को निश्चित कर और अपने मन को एकाग्र कर के साहस से अभ्यास करें तो हमें अपने काम में कामयाबी जरूर मिलेगी।

**(सरिता से साभार)**

---

# पाठकों के विचार

सत्यदेव की जय का नारा लगाते हुए जीवन में पहली बार आपकी धर्म जीवन पत्रिका भली भांति अवलोक करने का सुअवसर देव समाज श्री अकबरपुर में आने पर मिला। जिसे पढ़ कर मेरा जीवन निर्थक से सार्थक हो उठा। मैं निराकृत होकर अपने उत्तम उत्कृष्ट विचारों को स्पष्ट करने हेतु विवश हो रहा हूं।

ऐसी श्रेष्ठ पत्रिका भारत के घर घर में हर भाषा में पहुंचनी बहुत बड़ी धर्म सेवा होगी भले ही आधुनिकता विपरीत दिशा की ओर मुड़ कर रह गई है। फिर भी पत्रिका में कभी न कभी किसी की दृष्टि पड़ ही सकती है और पढ़ने मात्र से पाठक के जीवन में बदलाव आ कर उसे "धर्म जीवन" बिताने की अभिलाषा के अंकुर उठा कर पनपने बढ़ने का काम अवश्य करेंगे। ऐसे विश्वास को जीवन में साथ लिए विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका की लिपि और बड़े अक्षरों में छपे तथा स्याही चटक और आकर्षक हो सके तो बड़ी हित कर बात होगी। अरे आज इंसान को क्या हो गया है? जो धर्म जीवन एकदम परे हो गया है। इन्हीं टूटे फूटे शब्दों में आपका सम्मान करते हुए।

**आपका**
**शिव मंगल परिहार**
**ग्राम खटौली जनपद फतेहपुर**

12

# ग्रैण्ड पेरंटस डे

मनुष्य की जिंदगी में रिश्तों का बहुत महत्व है। सम्बंधों से ही घर बनते हैं। घर उस स्थान को नहीं कहते, जहां हम खाते पीते, सोते जागते हैं, बल्कि घर वह स्थान है कि जहां हमें वैसा ही समझा जाए, जैसा हमारा रुतबा है। हमारे अस्तित्व का कुछ महत्व हो। यदि इस एहसास में शिथिलता आ जाए तो घर घर ने रहकर कचहरी बन जाता है। यही एहसास मनुष्य को अपने ही घर में रफ्यूज़ी बना देता है। दुश्मनों के मुकाबले में अपनों से अपमान सहने की स्थिति बहुत अपमान जनक वा असहनीय होती है। अपनों से बेगानगी का एहसास सबसे दुखदाई होता है। जिन्हें हम अपना समझते हैं और जिनके विकास में हमने अपना सारा यत्न, मेहनत, धन और समय लगाया है, उनसे हमें अपमान की अपेक्षा तो बिल्कुल नहीं होती। कई बार रिश्ते एक व्यापारिक रूप धारण कर लेते हैं। जब कुछ रिश्तों से हमें पाने की आशा नहीं रहती, तो वह तिरस्कार की चीज़ बन जाते हैं। उनकी ओर से हम उदासीन हो जाते हैं। उस समय मनुष्य यह बिल्कुल भूल जाता है कि यह समय उसके जीवन में भी आने वाला है। भविष्य को कोई थाम नहीं सकता। आज जो माता पिता है वह दादा दादी, नाना, नानी बनेंगे ही। यहां तक कि जो आज बच्चे हैं, उनका भी भविष्य यही होगा। जैसा हम पिछली पीढ़ी को देंगे, वैसा ही अगली पीढ़ी से पाएंगे।

एक दिन भास्कर में एक स्कूल के विषय में पढ़ा कि वहां पर ग्रैंड पेरेंटस डे मनाया गया। ग्रैंड पेरेंटस का अर्थ है। दादा-दादी, नाना-नानी। यह पढ़कर बड़ी खुशी हुई कि स्कूल में बच्चों के माता पिता को नहीं बल्कि उनके दादा-दादी, नाना-नानी को बुलाया गया। बच्चों ने उनका मनोरंजन किया, सम्मानित किया। कितना सुन्दर दृष्य होगा!

हमारे बज़ुरग वह लोग हैं कि जिन्होंने हमारा जीवन संवारने में अपनी सब शक्तियां लगाई हैं, परन्तु बच्चों के बड़े होने पर और उनके व्यस्त जीवन में उनके लिए समय नहीं होता। बच्चों के पास तो माता पिता के लिए समय ही नहीं होता, दादा-दादी तो उनके लिए दूर की चीज़ हैं। यह दिन मनाने का यही उद्देश्य है कि बच्चे उनके प्रति स्नेह वा सम्मान प्रदर्शन कर सकें, उनकी बूढ़ी आंखे इस चीज़ को ही तरस्ती रहती हैं। उनके पास अनुभवों का खज़ाना होता, वह प्यार के सागर हैं, अपने बच्चों को जो उन्होंने स्नेह दिया था, उससे भी कहीं बढ़कर वह अपने पोते पोतियों नाती-नातियों को प्यार करते हैं। उनका प्यार और मार्ग दर्शन एक वरदान होता है।

बेशक हमारे देश में पश्चिमी देशों के मुकाबले अपने बज़ुरगों का अधिक ख्याल रखा जाता है। परन्तु इस प्रथा का प्रारम्भ पश्चिमी क्र्जीनिया की एक महिला मारियन मैकवेड ने किया था। उसके पिता कोयले की एक खान में काम करते थे। बचपन में वह अकसर अपनी दादी को मिलने उनके फार्म पर जाती थी। शाम को दादी काम से खाली होकर अकसर बड़े बूढ़ों को मिलने चली जाती, मरियन भी उनके साथ चली जाती। धीरे

धीरे उसके इस प्रकार मिलने जुलने से बूढ़ों के प्रति उसके मन में स्नेह वा सत्कार पनप पड़ा।

जैसे जैसे बड़ी होती गई, वह इस विषय में गहराई से सोचने लगी, समाज में वरिष्ट नागरिकों को सम्मान दिलाने की भावना दिन प्रतिदिन बलवती होती गई। 1956 में पहली बार उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिला जब रिचवुड के एक न्यूज़ पत्रिका में व्यक्त करने का अवसर मिला रिचवुड के इस न्यूज़ लीडर के सम्पादक की मदद से उसने पास्ट 80 पार्टी बनाई (80 वर्ष के बड़े लोगों की) यह पार्टी प्रतिवर्ष रखी जाने लगी। सैंकड़ों की गिणती में राज्य के सभी भागों से 80 - 90 वर्ष के बजुरगों को इकट्ठा किया जाता, दावत दी जाती, प्रतियोगताएं रखी जाती, उनका भरपूर मनोंरजन किया जाता। मारियन के पति ने भी इसमें उसकी सहायता की। यह पति पत्नी ओल्ड होमज़ से सम्पर्क करते, वहां बजुरग जो अकेला पन अनुभव करते उन्हें क्रिसमिस के दिन उपहार देते। मारियन के इस संग्राम ने दादा दादियों को सम्मानित करने के विचार को जन्म दिया। आखिर 27 मई 'ग्रैंड पेरेंटस डे' के नाम पर घोषित किया गया।

अमरीका में भी लोग Monther's day, Father's day and Grand Parents Day मनाते हैं। उस दिन को पारिवारिक समारोह की तरह मनाया जाता है। खेल आयोजित किए जाते हैं। बड़े समूह में बड़ों से पुराने किस्से कहानियां सुनी जाती हैं।

यदि यह दिन घर घर में मनाया जाए और बजुरगों के महत्व को समझा जाए तो ओल्ड होमज़ की आवश्यकता ही नहीं रहती, बच्चे इस दिन को तो अवश्य मनाएं। परिवार इकट्ठे हों। बजुरगों की पुरानी यादें ताजा की जाएं। कम से कम एक दिन हम अपनी पुरानी जड़ों को खोजें। दो पीढ़ियों को जोड़ने का यह अच्छा तरीका है। बच्चों को अपना इतिहास जानने का अवसर मिलता है।

इस दिन हमें उन लोगों को भी नहीं भूलना चाहिए जिनके बच्चे पास नहीं। कई ऐसे अभागे माता पिता है, जिनकी नलायक संतान उनसे बेरुखी रखती है। उन लोगों तक भी हम पहुंचें और उन्हें चन्द पल खुशी के दें ऐसा हमारा कदम उन तरस्ती आंखों को ठण्डक पहुंचा सकता है।

हमारे महा सौभाग्य हैं कि हमें देवात्मा गुरु मिले हैं। जिन्होंने सम्बंधों की अदभुत शिक्षा दी है। सम्बंधों के प्रति उदासीन रहकर कोई धर्म नहीं आता। उन्होंने ही हमारे सम्बन्धों में हमें सच्चा स्वर्ग दिखाया है। हमारे बच्चे यदि हमें सम्मान देते हैं, तो देवात्मा की शिक्षा का ही फल है। यदि हम अपने माता पिता और बजुरगों का सम्मान करेंगे, बच्चों के लिए ऐसा आदर्श छोड़ेंगे, तो हमारे बच्चे भी उसी मार्ग पर चलेंगे। देवात्मा सत्गुरु की कोई और शिक्षा चाहे समझ में न आए, परन्तु सम्बंध तत्व की शिक्षा तो हमें बखूबी समझ आती है, क्योंकि हम सब सम्बंधों में बंधे हुए हैं।

मैं तो यह अनुभव कर रही हूं, विश्व में जो भी विकास के कार्य हो रहें हैं, वह देवात्मा की शिक्षा को ही फैलाने के कार्य हैं। सम्बंधों में यह दिन मनाना भी उसी की ही एक कड़ी है।

**सुरजीत बराड़**

# सत्य धर्म बोध उत्सव

गर्मी और कुछ अन्य कारणों से सत्य धर्म बोध उत्सव 24 दिसम्बर से 26 सितम्बर तक 21 डी धर्मशाला में मनाया गया। 22 तारीख की शाम से 24 तारीख सुबह तक सत्संग की विशेष सभाएं हुई जिसमें शामिल होने के लिए कुछ धर्म सम्बंधी पहुंच गए थे।

इस उत्सव सम्बंधी सूचना और प्रोग्राम पंजाबी, हिंदी की सामाजिक पत्रिकाओं में छापे गए। इसके सम्बंध में निमंत्रण पत्र भेजे गए। पत्र लिखे गए। स्थानी जनों को 19 की इतवार को सभा में यह सूचना दी गई और अधिक से अधिक जनों को लाने की प्रेरणा की गई।

इस उत्सव की तैयारी के लिए श्रीमान जगदीश जी, सुखदेव जी आदि ने पूरा पूरा सहयोग दिया। धर्मशाला के ऊपर के हाल और कमरों की सफाई करवाई गई। बिछाई आदि की गई। 24 तारीख की सुबह की सभा के बाद साधन हाल को सजाया गया। सफेद चादरों की बिछाई की गई। गुरु महाराज की फोटो को सजाया गया। बाकी अनुरागी शिष्यों और त्यागी, बैरागी आत्माओं की फोटोज़ लगाकर हाल को सजाया गया। माटोज़ लगाए गए। अर्चण के लिए हारों का प्रबंध किया गया। खाने आदि के लिए लंगर का अच्छा प्रबंध किया गया। इस उत्सव में शामिल होने के लिए नीचे लिखे स्थानों से यात्री पहुंचे :-

खतौली, केसूपुरा, कल्याण, मेरठ, पदमपुर, गुरुहरसाय, संगरुर, गोनियाना, मल्लेका, मोदीपुरम, मोगा, समराला, पंचकूला, मोहाली, राएपुरकला, अनूपगढ़ इसके भिन्न लोकल सेवक और श्रद्धावान भी अच्छी संख्या में सभाओं में आकर शामिल होते रहे।

22 तारीख से सत्संग की सभाएं आरम्भ हो गई। 22 सितम्बर 2004 शाम 6 बजे की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उन्होंने इस सचाई को बताया कि हम हर समय प्रभावों में रहते हैं। यह भी सच है कि 99.9 प्रतिशत हम दूषित प्रभावों में रहते हैं। यह प्रभाव नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं के हैं। इन प्रभावों से अज्ञानी रहकर बहुत हानि होती है। सबसे बड़ी हानि यह है कि कई बार जीवन का लक्ष्य ही बदल जाता है। एक एक परोपकारी भी धन अनुरागियों के प्रभावों में रहकर धन बढ़ाने के चक्र में पड़ जाता है। सब वर्गों, किसानों, व्यापारियों, मुलाज़मों पर प्रभावों का खेल निरन्तर जारी है। प्रभावों के अनुसार मनुष्य अपने लक्ष्य से बेमुख हो जाता है। प्रत्येक अस्तित्व असर छोड़ता है। खराब प्रभावों में भी मनुष्य इस प्रकार मदहोश हो जाते हैं-जैसे सूअर गंदगी में मस्त रहता है। परन्तु सचाई यह है कि बुरे प्रभावों के अंधेरे में कीमती बाघ मारे जाते हैं। यह प्रभाव हमें संसारिकता में मगन कर देते है यह प्रभाव वह बरसात हैं कि जो हर समय वाह वाह, बड़ाई, लोकाचार में ही महानता दिखाते हैं।

देवात्मा की संगत में ऐसे प्रभाव हैं, जो मनुष्य को भले मार्ग पर चलने के लिए प्रभावित करते हैं। यह मनुष्य की जीवन के प्रति उदासीनता को दूर करते हैं। जीवन को होश देते हैं। जीवन में मुख्य वस्तु है अपने आत्मा को जानना, नीच प्रभावों से बचाकर उच्च प्रभावों द्वारा आत्मा का विकास करना। बाबा बचन सिंह जी अनपढ़ होकर

भी गांव के बुरे असरों से बचकर भटिंडा देव समाज मन्दिर में आकर रहने लगे थे। वह अपने जीवन के कई अनुकरणिय उदाहरण छोड़ गए।

श्रीमान जी ने बताया कि बचपन में खाने पीने की जो वस्तुएं आकर्षित करती थी, वह अपने लिए अब हानिकारक नज़र आती हैं।

ज्ञान सिंह जी महाराज फरीदकोट के कर्मचारी थे, वहां पर वह शराब से बचे रहे, परन्तु गांव की संगत ने उनहें शराबी बना दिया, इससे उनकी अपनी और उनके परिवार की बड़ी हानि हुई देवात्मा के प्रबंध के अनुसार यह सभाओं का प्रोग्राम रखा हुआ है। हमारी बेसुधि वा उदासीनता को दूर करने के लिए उच्च प्रभावदयक वातावरण है हमें अपनी ज़िन्दगी की तरज़ बदलने की आवश्यकता है। लक्ष्य बद्ध होकर जीवन का भला करने की आवश्यकता है।

23 सितम्बर 2004 की सुबह की भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य दुखी नहीं रहना चाहता, परन्तु दुख फिर भी मिलते हैं। परमात्मा से भी यही प्रार्थना करता है। कि वह दुखों से बचा रहे। परमात्मा तो न दुख देता है और न ही सुख। दूखों का कारण कुछ और है। किसी मूर्ति की प्रार्थना करो कि आपके दुख दूर हों, उसमें यह सामर्थ्य नहीं है।

परम पू० भगवान देवात्मा ने अपनी देव ज्योति में देखा है कि मनुष्य के दुखों के कारण उसके सुख अनुराग हैं। बहुत बिमारियो स्वाद अनुराग से पैदा होती हैं। बरनार्ड शाह बहुत बड़े विद्वान हुए हैं। उन्होंने कहा था कि हमारी कबरें हमारी रसोई घरों में खोदी जाती हैं। धन प्राप्ति का बढ़ा हुआ सुख बेहद दुखों में फंसा देता है। समानों और सम्बन्धियों के मोह बंधन भी अनेक दुखों में फंसा देते हैं। सुख अनुराग मनुष्य का लोक, परलोक दोनों ही बिगाड़ देते हैं। बच्चों का मोह दूसरों के साथ लड़ाता है। श्रद्धेय कनल जी ने खुद लिखा है कि एक बार अपने बच्चे को रोते देखकर अनजाने में दूसरे बेकसूर बच्चों को थप्पड़ लगा दिया और उसे सजा दे दी। हमारे सुख अनुराग हमें सत्संग में आने नहीं देते। देव धर्म के अनुयायीयों को चाहिए कि वह अपने बच्चों को भी सत्संग में लाएं, ताकि बच्चों को अच्छे संस्कार मिलें। परलोक जाने के समय सम्बन्धियों और समाजों का मोह हमें दुख देता है। मान बड़ाई का सुख हमें दुखी करता है। डा० मथुरा दास जी अपना अपमान सुनकर रातों रात मोगा छोड़ गए। अपने विरुद्ध मुर्दाबाद के नारे बरदाश्त नहीं हुए। बहुत सारी सुन्दर उदाहरणों के द्वारा दुखों के कारण बताए गए। बहुत प्रभावशाली ब्यान था।

23 तारीख की शाम की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने सचाई और झूठ के दो भिन्न भिन्न रूप बताए। सच द्वारा हित होता है और मिथ्या द्वारा महा हानि। एक लड़की ने बच्चे को गल्ती से दूषित पानी पिला दिया और बच्चा मर गया। यदि लड़की को सत्य ज्ञान होता तो यह दुर्घटना न होती। मलेरिया बुखार अब बाहर से भेजी हुई बिमारी नहीं समझी जाती, पहले इसका ईलाज़ चरखे पर कपड़ा डालकर किया जाता था। अब सचाई की रोशनी में खून टैस्ट करके ही इसका ईलाज होता है। सत्य ज्ञान का विस्तार हो रहा है। मिथ्या विश्वासों के लिए कोई स्थान नहीं। मिथ्या अस्तित्वों से प्रार्थना करके आग में पके दानों से खेती नहीं उगती। सत्य की रोशनी नियमों का ज्ञान देती है, इसलिए जीवन के हर क्षेत्र में विद्या, खेतीबाड़ी पशुओं के पालन, फलों फूलों के उगाने, व्यापार, ईलाज में सत्य ज्ञान का बोलबाला है। सत्य

की जीत और झूठ की हार अवश्यम्भावी है। देवात्मा सत्य के पूर्ण अनुरागी और सत्य की मूर्ति हैं। उन्होंने प्रत्येक सत्य और मिथ्या को परखने की कसौटियां दी हैं, हम उनको अपना सकें।

24 सितम्बर 2004 की सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उन्होंने बताया कि गांव में एक नौजवान ने परचून की दुकान खोली, दुकान बहुत चली, सौदा बहुत बिका, परन्तु ज्यादातर उधार ही चलता रहा। दुकानदार ने आमदन का कोई हिसाब नहीं रखा। दुकानदार को और सौदा मिलना बंद हो गया, आखिर दुकान बंद हो गई। हमें जीवन मिला है, पर मौत भी अवश्यम्भावी है। मरने से पहले हम अपनी कमाई का हिसाब किताब नहीं रखते। उपरोक्त दुकानदार की तरह हमारा भी जीवन का दिवाला निकल जाता है। यह प्रश्न उठना चाहिए कि अब तक हमने क्या कमाई की है। भारतिय साधु भीख मांग कर खाते हैं, मक्खियों की तरह जिन्दगी व्यतीत कर देते हैं। हम मौत से पहले अपने जीवन की कमाई का मुल्यांकन करें। हम इसी बात पर संतुष्ट रहते हैं कि हमने यह काम कर दिया, हमने बच्चों का यह संवार दिया। मनुष्य जीना चाहता है, परन्तु शरीर को ठीक रखने का संग्राम नहीं कर सकता, उच्च भाव पैदा करने या आत्मा की सुध लेने के लिए तो उसके पास कहां समय है। भगवान देवात्मा दुखी होकर फरमाते हैं कि जो यह पहने फिरते हो, ज्ञान ध्यान के टोकरे उठाए फिरते हों, यह शरीर जिसे चीलें खा जाएंगी, कुत्ते खा जाएंगे। जिस शरीर को अपना समझते हों, यह बहुत बड़ा अंधेरा है। शरीर को भी ठीक रखना है, धन भी कमाना है, परन्तु दूसरों की सेवा में लगाना है, बुद्धि को भी दूसरों के लिए प्रयोग में लाना है, धर्म को भी औरों तक पहुंचाना है। यह नेचर की इमानतें हैं। सत्य धर्म की कमाई से उच्च सुखों की प्राप्ति होती है, अनुचित दुखों से नजात मिलती है। सत्संग के लिए समय निकालना बहुत अवश्यक है। जीवन का हिसाब किताब लगाना आवश्यक है। सुन्दर उदाहरणों द्वारा विषय को स्पष्ट किया गया। श्री अहुजा साहिब को कैसे सिगरेट ने ही खत्म कर दिया। जो जीवन का लेखा जोखा करके चलते हैं, उनके जीवन उदाहरण बन जाते हैं। एक ग्राम निवासी अंधे ज्ञानी जी लड़कियों का स्कूल चलाते थे, उनके लिए पानी भरते थे। सारा दिन बच्चीयों की सेवा करके जीवन सफल कर गए। भक्त पूर्ण सिंह जी, सर गंगाराम जी, फादर डैमियन, फलोरेंस नाईटिंगेल लिंकन, ऋषि जी, श्रद्धेय श्रीमान परमेश्वर दत्त जी, श्रद्धेय जी आदि को लगभग हररोज़ प्रणाम करता हूं। चौधरी बृज लाल जी गोनियाना के परोपकारी जीवन की झांकी पेश की गई। समय रहते रहते हम देवात्मा की ज्योति प्राप्त कर लें। इससे पहले कि माता पिता चले जाएं, धन चला जाएं, उच्च भावों की कमाई कर लें। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी नहीं बन सकते, कुछ तो बने। बाबा बचन सिंह जी, श्रीमती सुशीला देव जी, श्रीमान राम सिंह जी, श्रीमान गोपीचन्द जी, श्रीमान नेत राम जी आदि की तरह ही बनें। यदि कोई भाव श्रद्धा कृतज्ञता वा हमदर्दी का पैदा हो गया, तो जीवन सफल हो गया। गल्तियां अवश्य होंगी, कमीयां रहेंगी परन्तु यदि देवात्मा के देव प्रभावों के लिए कुछ आकर्षण पैदा हो जाएं, तो बहुत भला हो सकता है। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी, अनेक हृदय सभापति जी और देवात्मा के चरणों में झुक रहे थे।

## सत्य धर्म बोध उत्सव

**प्रवेश सभा : 24 सितम्बर 2004**

**शाम 5.00 बजे**

**सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी**

एक भजन के गान के बाद भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया गया। देव स्रोत का गान वा व्याख्या की गई। देवात्मा के दर पर आर्शीवाद प्रार्थना की गई ताकि यह उत्सव का प्रोग्राम सफल हो सके।

सभापति जी ने प्रश्न किया कि धर्म के अर्थ क्या है। कुछ उत्तर मिलने पर उन्होंने बताया कि मेरे ज्ञान अनुसार धर्म का अर्थ है कर्तव्य, फर्ज़ या डियूटी। सत्य धर्म का अर्थ है सच्चा कर्तव्य। यह उत्सव हमारे अस्तित्व के सम्बंध में है दुनियां के और सुख और सम्बंधी हैं, उनका कोई अर्थ है यदि हमारा अस्तित्व ही नहीं तो दुनियां के सब पदार्थ बेअर्थ हैं। इसलिए हमारी हमारे अपने प्रति भी ज़िम्मेवारीयां हैं। इस शरीर को बचाने, इसको सुन्दर और उपयोगी बनाने, इसके विकास के लिए धर्म है। क्योंकि हमारा अस्तित्व हमारे और सम्बन्धियों पर निर्भर है। (चारों जगतों पर) हमारे कर्तव्य कर्म धर्म के कर्म हैं। इनका ज्ञान और बोध ही सच्चे ध र्म का बोध है। यह उत्सव अति श्रेष्ठ है। इसमें शामिल होकर लाभ उठाना मुबारक है। आप सब इस उत्तम मकसद के लिए पधारे हो इसलिए सम्मान के अधिकारी हो। सभापति जी ने खड़े होकर सबका स्वागत किया और प्रणाम किया।

उसके बाद उन्होंने बताया कि इन सभाओं से कैसे अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सकता है। शुभ चिंतन अर्थात दूसरों के गुणों वा उपकारों को स्मरण करके और दीन बनकर ही हम देव प्रभावों को पाने के अधिकारी हो सकते हैं। सेवा द्वारा हृदय नम्र होता है। सभा अधिकारी आत्माओं को लाभ उठाने के लिए बहुत अच्छी प्रेरणा थी।

सभापति जी के ब्यान के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी आए हुए यात्रियों का स्वागत किया और 25 सितम्बर, 2004 का प्रोग्राम बताया और सभाओं में एकाकारी पहनकर आने की प्रेरणा की।

**25 सितम्बर, 2004 सुबह 9 बजे।**

**सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी**

भजन के बाद भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया गया। देव स्रोत का गान किया गया। सभापति जी ने ज़ोरदार भावों से देव स्रोत की व्याख्या की। सभा का विषय बताया, "आत्मा अबोधता की हानियां और आत्मा बोध का लाभ"

"मुझको मेरा बोध कराओ," नामक भजन जगदीष जी ने भावों से भरकर गाया। उसके बाद सभापति जी ने ज़ोरदार भावों से देवात्मा सत्गुरु के दरबार में आर्शीवाद प्रार्थना की।

सभापति जी ने बताया कि मनुष्य पशुओं से आया है। 99 प्रतिशत अभी तक पशु स्तर पर ही जी रहें हैं। इंसान सही अर्थो में एक सुसभ्य पशु ही है। मनुष्य ने पत्थर से लेकर ऐटमी शक्ति की खोज से भी आगे अथाह ज्ञान प्राप्त किया है, पर अपने अस्तित्व के ज्ञान पाने में कोई जिज्ञासा नहीं दिखाई। पशु और मनुष्य दोनों को ही अपने अस्तित्व का कोई वा बोध नहीं। संतान पैदा करना, जीने के लिए खान-पान की आवश्यकताओं को पूरा करना, घर बनाना, यह काम पशु और मनुष्य दोनों ही करते हैं जब मनुष्य को अपना ज्ञान हो जाएगा, तभी वह मनुष्य कहलाने का हकदार होगा।

अबोधता का नाम अंधकार है। आत्मिक अबोधता का अर्थ आत्मिक अंधकार है। आत्मा का स्वरूप, आत्मा के रोग, आत्मा का पतन और

विकास के विषय के बारे अंधकार ही आत्मिक अबोधता है। फिर सभापति जी ने आत्मिक अबोधता की हानियां बताई। आत्मिक अबोधी की चार बड़ी हानियां हैं।

(1) आत्मिक अबोधी को हितकर वा हानिकारक संगत का ज्ञान वा बोध नहीं होता। हानिकारक संगत करके दुख वा हानियां उठाता है। हितकारियों से दूर रहकर खुशी खुशी आत्मिक शत्रुओं की संगत करता है।

(2) हानिकारक और अहितकर चिंताओं के विषय में अंधकार में रहकर हानिकारक चिंताओं द्वारा तृप्ति करके खुश रहता है। विशेषकर निन्दा, ईर्ष्या, द्वेष की चिंताओं के द्वारा अपने आत्मा को झुलसता रहता है।

(3) झूठे वा सच्चे विश्वासों के सम्बंध में अबोधी रहकर मिथ्या विश्वासों में विचरता है और महाहानि उठाता है।

(4) पाप और झूठ की गतियों, सचाई और भलाई की गतियों सम्बंधी अबोधी रहकर नीच कर्मो के द्वारा हानि उठाता है।

आत्म बोध क्या है? आत्मा की हानि के गहरे एहसास को ही आत्म बोध कहते हैं। आत्मा के परिवर्तन, आत्मा के पतन और विकास का बोध आत्म बोध है आत्मा के नाश और उससे डर का, सच्चा दुख वा पीड़ा ही आत्म बोध है। जैसे शारीरिक मौत का डर वा दुख है, मनुष्य को बिजली, आग, तलवार का वार, गाड़ी के नीचे आने, ऊंची मंज़िलों से गिरने का स्वभाविक डर होता है और उससे स्वभाविक रूप से ही मनुष्य बचता है। मनुष्य को फिर भी शारीरिक बोध नहीं। अच्छी खुराक, साफ हवा, आक्सीजन सैर, व्यायाम, सफाई, स्नान आदि सम्बंधी गहरे बोध नहीं। इस प्रकार मनुष्य को नीच गतियों सम्बंधी मनुष्य को कोई खौफ नहीं, सांप की डंक की तरह भय नहीं लगता, तब तक मनुष्य का आत्मा का बोध नहीं। अनुचित लालच और बेईमानी चुभती नहीं, दुखी नहीं करती तो आत्मा का बोध नहीं। नीच चिंताओं और क्रियाओं का कोई डर वा दुख नहीं, निंदा से कोई डर नहीं, दूसरों का अपमान वा हकों के अपहरण की कोई पीड़ा नहीं, उपकारियों के प्रति अकृतघ्नता भयानक नहीं दिखाई देती, फिर आत्मा का कोई बोध नहीं।

इस कठिन विषय को सभापति जी ने बहुत सरल बनाकर समझाने का यत्न किया।

**25.9.2004 दूसरी सभा 11.30 बजे**

**सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी**

**विषय :** स्वस्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या

सभापति जी ने बताया स्वास्तित्व यज्ञ सम्बंधी देव ज्योति भरपूर जो देवात्मा ने आदेश दिए हैं, वह इस प्रकार है : 1. आवश्यक बोध 2. आत्मिक गठन 3. आत्मा का शरीर के साथ सम्बंध 4. हमारे अस्तित्व का विश्व नेचर के साथ जुड़े होना 5. मुख्य लक्ष्य 6. मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए देव प्रभावों की प्राप्ति अति जरूरी है 7. देव प्रभाव प्राप्त करने के लिए साधन। इसके अतिरिक्त देवात्मा ने शरीर के सम्बंध में 14 आदेश और 12 आदेश वर्जित कर्मो के विषय में दिए हैं।

पहले आदेश का पाठ करते हुए व्याख्या की प्रत्येक मनुष्य के लिए अपने अस्तित्व के विषय में अर्थात अपने अंदर का जानने की अकांक्षा है। आगे बताया कि शरीर और आत्मा दोनों हमारे अस्तित्व के भाग हैं। उनका अकाट्य सम्बंध है। कोई मनुष्य शरीर के बिना जिंदा नहीं रह सकता। कोई आत्मा शरीर के बिना कोई क्रिया नहीं कर

सकता। आत्मा की परिभाषा केवल देवात्मा ने दी है। हमारा अस्तित्व नेचर के चारों विभागों से जुड़ा हुआ है। मनुष्य का मुख्य लक्ष्य नीच जीवन में मोक्ष पाना और उच्च जीवन में विकास करना है। मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा ही सम्भव है। यह देव प्रभाव तीन प्रकार के साधनों द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं। देव प्रभावदायक संगत, देवप्रभाव परिपूर्ण लेखों के पाठ और भजनों के गान के द्वारा। तीसरा साधन है, वह सब त्याग करते, कष्ट वा हानियां सहना इस मुख्य लक्ष्य के लिए आवश्यक हैं।

सभापति जी ने अपनी अयोग्यता स्वीकार की इन उच्च स्तर के आदेशों के पढ़ने वा व्याख्या करने में अनेको कमीयां रह गई होंगी, क्योंकि आदेशों के दाता सत्य और शुभ अनुरागी देवात्मा हैं और हम निम्न शक्तियां रखने वाले मनुष्यात्मा हैं। क्षमा प्रार्थना करते हुए सभापति जी ने दीनता पूर्वक सभा को समाप्त किया।

**25.09.2004 तीसरी सभा शाम 5.30 बजे**

**सभापतिः श्रीमान डाक्टर विनोद जी खेड़ा**

**विषय :** भगवान देवात्मा के प्रभावों का आद्वतीय कारज।

डा० विनोद जी खेड़ा ने भगवान देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा हुए अद्वितीय कारज का तीन महान हस्तियों के जीवनों को पेश करके, बहुत सुन्दर नक्शा खींचा। उन महान हस्तियों के स्वैलिखित पत्रों का पाठ किया :-

1. श्रीमान सरदार साहिब, सरदार जमीयत सिंह जी के पत्र डाक्टर साहिब ने श्रद्धा पूर्वक पाठ किए, देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा इस धार्मिक हस्ती के धर्म के सम्बंध में मिथ्या विश्वास और साधन बंद हो गए। सरदार साहिब अपने भीतर आए उच्च परिवर्तन का शुक्रगुजारी के भावों से भरकर प्रकाश करते। वह एक स्वर्गीय अवस्था प्राप्त कर गए। उनके ही यह वचन हैं, "दीन दयाल भरोसे तेरे, सब परिवार चढ़ाया बेड़े।"

इस प्रकार सभापति जी ने पड़नाना जी 60 वर्ष की उमर में देव प्रभाव पाकर सौभाग्यवान डाक्टर कहलाने लगे। स्वार्थी जीवन तजकर परोपकारी बन गए। अपने सुपुत्र श्री मदन मोहन लाल जी को आज्ञा दे गए कि सारी उमर पोस्ट मास्टरी न करते रहना, जीवन को परोपकार और गुरु कारज में लगाकर सफल करना। सभापति जी ने बहुत अच्छे अंदाज में उनके पत्रों का पाठ किया। कई जन बहुत प्रभावित हुए।

आख़िर में सरदार साहिब, सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन परिवर्तन से उनके सुपुत्र श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के पत्र का पाठ किया। जो श्रद्धा और प्रेम के भावों से भरपूर था। गुरु महाराज के आद्वितीय देव प्रभावों के आद्वितीय कारज को हाजरीन के दिल पर अंकित कर रहा था कि किस प्रकार हिंसक गतियां करने वाले परन्तु अधिकारी आत्मा धर्म के राह के सच्चे मुसाफिर देव प्रभाव बना देते हैं।

यह सभा बहुत प्रभावशाली थी। कई जन बेइख्तियार गुरु महाराज और सभापति के आगे झुक रहे थे।

**26.09.2004 पहली सभा 8 बजे सेवेरे**

**सभापति : श्री बलबहादुर सिंह जी**

**विषय :** भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन पैदा करने का अनोखा कारज और उसके प्रति हमारी ज़िम्मेवारियां धन और जन की अपील।

देवात्मा के अर्चन, देव स्रोत के गान और व्याख्या के बाद आर्शीवाद प्रार्थना की गई।

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88


सभापति जी ने हाज़रीन को शामिल करते हुए मनुष्य के नीच जीवन की तस्वीर बनाने का सफल यत्न किया। हमारे देश के भीतर हमारे घरों के अंदर जो नीच जीवन की लीला है, उसका सांकेतिक वर्णन किया। देव प्रभावों को प्राप्त करके कैसे वासना के गुलाम पवित्र हो जाते हैं। नेता ब्राह्मण नेत राम जी बन जाते हैं। स० हरनाम सिंह जी अपनी ही लड़कियों को मारने वाले, न केवल उनके शुभ चिंतक बन जाते हैं, बल्कि उनके लिए स्कूल खोल देते हैं। माता का घोर अपमान करने वाले इस योग्य बन गए कि माता ने पवित्र खुशी से भरकर एक सर्टीफिकेट दिया, "बेटा, तूने तो मेरे पेड़ पड़ने का बदला उतार दिया। हमदर्द और पवित्र अध्यापिका हस्तियां श्रद्धेय श्रीमान कनल जी और श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे महान बन जाते हैं। यह कारज अनोखा कारज नहीं तो और क्या है।

इससे आगे श्रीमान बलदेव सिंह जी ने धन और जन की अपील करते हुए बताया कि नीच जीवन भावों की पैदायश हैं। मुख्य तौर पर धन सम्पति सम्बंधी प्यार, मान बड़ाई, पद प्रभुत्व का प्यार, स्वार्थ का भाव, ईर्ष्या का भाव, नशों की गुलामी, हिंसक जीवन, पदो की भूख, अंधी सैक्स वासना, आलस्य, सुख की गुलामी, स्वाद वासना की गुलामी, धार्मिक कट्टरता का जीवन, यह सब नीच भावों का जीवन है। यह जीवन का नाश ही नहीं सर्वनाश करते हैं। देवात्मा ने फरमाया है :-

"मैं इसी दुनियां में सच्चा स्वर्ग लाना चाहता हूं।", "बचाना मरती रूहों को, मिशन अपना बनाया है।" मैं गुरु का शिष्य बनने से पहले, पाठ करता, यदि कोई दखल देता तो कोई न कोई चीज़ उठाकर फैंक देता कि यह अधर्मी मुझे भी धर्म का साधन करने नहीं देते। मां नज़र नहीं आती थी। मां ने विधवा होकर ज़मीन, पशु सम्भालकर हमें पाला पोसा, परन्तु मां के उपकार नज़र नहीं आए। भगवान देवात्मा के प्रभावों ने मां को प्रणाम करने लगा दिया, उनकी सेवा करने लगा दिया, परन्तु फिर भी अपनी मर्जी के विरूद्ध बात होती तो बौखला जाता। भेड़िए के दांत तो गुरु ने निकाल दिए, परन्तु घुर घुर फिर भी चलती रहती। धर्म पत्नि के सम्बंध में भी सख़्ती बंद हो गई। श्रीमान नौध सिंह जी भी नीच जीवन के अवतार थे, उनमें देवात्मा ने आश्चर्य जनक परिवर्तन ला दिया। श्रद्धेय श्रीमान गुरुवंत सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी और श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी मेरे खास उपकारी हैं। दाता जी के भीतर भी कमाल शुभ परिवर्तन आया।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

**सम्पादक डा० विनोद खेड़ा**

**Book Posts**